फ्रांस का शासक हेनरी चतुर्थ (1589-1610 ई०)

1589 ई० में हेनरी आफ नावारे (नावरे का राजकुमार) हेनरी चतुर्थ की उपाधि धारण कर फ्रांस का शासक बना। उसने फ्रांस को धार्मिक एवं गृहयुद्ध की विभीषिका से मुक्ति दिलाई और शांति व्यवस्था की स्थापना की। वह एक साहसी एवं दूरदर्शी शासक था। राज्यारोहण के समय उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा जैसे - उत्तराधिकार की मान्यता का प्रश्न, धार्मिक समस्या, ह्यूगनोट्स सामन्तों की बढ़ती शक्ति, खराब आर्थिक दशा एवं प्रशासनिक समस्या आदि। इन समस्याओं के समाधान के लिए हेनरी चतुर्थ ने निम्नलिखित कार्य किए —

1. धर्म परिवर्तन :—

- हेनरी चतुर्थ ने फ्रांस के जनमत को अपने पक्ष में करने तथा कैथोलिकों व ह्यूगनोट्सों के बीच छिड़े धार्मिक संघर्ष को समाप्त करने हेतु जुलाई 1593 ई० में कैथोलिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की
- हेनरी के धर्मपरिवर्तन से फ्रांस का जनमत उसका समर्थक बन गया और रोम के पोप ने भी उस धर्म परिवर्तन को मान्यता दे दी
- अनेक प्रान्तों एवं नगरों ने उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया।
- स्पेनी सेना को भी विवश होकर वापस स्पेन लौटना पड़ा। इसी के साथ स्पेनी हस्तक्षेप का भी अन्त हो गया।

2. नान्टेस की राजाज्ञा :—

- हेनरी चतुर्थ ने धर्मपरिवर्तन से कैथोलिकों को संतुष्ट करने के बाद प्रोटेस्टेन्टों (ह्यूगनोट्स) को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की
- 15 अप्रैल 1598 ई० को हेनरी ने नान्टेस की राजाज्ञा की घोषणा की और ह्यूगनोट्सों को निम्नांकित धार्मिक अधिकार प्रदान किया -
  1. 200 नगरों एवं 3500 दुर्गों में ह्यूगनोट्सों को पूजा का अधिकार होगा।
  2. इन नगरों में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल एवं कालेज खोलने तथा पुस्तक प्रकाशन का अधिकार होगा।

3. ह्यूगनोट्स धर्मावलम्बी सैनिक सेवा बाध्यता से मुक्त होंगे
4. नागरिकता का अधिकार मिल जाने से वे सरकारी सेवा में नियुक्ति प्राप्त कर सकेंगे।
5. ह्यूगनोट्स जज की नियुक्ति सर्वोच्च न्यायालय में की जाएगी
6. 208 दुर्ग एवं सैन्य नगर में उन्हें सुरक्षा का अधिकार होगा। इन दुर्गों में नियुक्त सैनिकों को वेतन राजकोष से प्राप्त होगा। इन दुर्गों में सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार ह्यूगनोट्स के अधीन होगा

- इस राजाज्ञा ने फ्रांस में गृहयुद्ध को समाप्त कर दिया। ह्यूगनोट्स को धार्मिक स्वतंत्रता एवं अधिकार देश में शांति एवं धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना हुई
- हेज का कथन है कि "नान्टेस की राजाज्ञा का धार्मिक उदारता की आधुनिक कहानी में महत्वपूर्ण स्थान था।"

(3) सुदृढ़ राजतंत्र की स्थापना :—

- भीषण गृहयुद्धों के कारण राजतंत्र की शक्ति क्षीण हो गई थी। फ्रांस में सामन्तों ने अपनी शक्ति में काफी वृद्धि कर ली थी
- हेनरी ने प्रारम्भ में सुलह की नीति अपनायी किन्तु असफल होने के पश्चात् दमन की नीति का अनुसरण किया।
- उसने बिरो नामक सामन्त को मार्शल, ड्यूक एवं बरगण्डी का गवर्नर बनाकर विश्वासपात्र बनाने का प्रयास किया किन्तु जब बिरो की षड्यंत्रकारी गतिविधि बढ़ती गई, तब संसद से उसे देशद्रोही घोषित कराकर मृत्युदण्ड दे दिया
- दक्षिण फ्रांस के विद्रोही सामन्तों के दुर्गों को नष्ट कर उनका दमन किया
- बेयो नामक ह्यूगनोट सरदार को पराजित कर राजधानी सेन्दा पर अधिकार कर लिया
- हेनरी ने अपने विरोधियों की शक्ति का दमनकर सुदृढ़ राजतंत्र की स्थापना की

(4) आर्थिक सुधार :—

- हेनरी चतुर्थ ने फ्रांस के आर्थिक पुनरुद्धार के लिए अपने ह्यूगनोट्स मित्र सुली को सली की उपाधि प्रदान की और अर्थ मंत्री नियुक्त किया
- सली ने आर्थिक क्षेत्र में कई सुधार कार्य किए। सर्वप्रथम उसने राजस्व विभाग

मे व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर किया। भ्रष्ट अधिकारियों को हटाकर ईमानदार लोगो की नियुक्ति की। अनावश्यक कर्मचारियों को पदमुक्त कर दिया।

- सामन्तो के कर संग्रह के अधिकार को समाप्त करके राज्य की ओर से कर्मचारियों की नियुक्ति की
- प्रान्तीय गवर्नरो के कार्यों पर नियन्त्रण के लिए नवीन राज्य कर्मचारियों की नियुक्ति की। इनकी नियुक्ति एवं पदच्युति का अधिकार राजा के पास था। वे राजा के प्रति उत्तरदायी थे
- उसने राजकीय व्यय एवं सेना पर होने वाले व्यय को निश्चित कर दिया।
- कृषि के विकास के लिए दलदली एवं बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया, सिंचाई के लिए नहरो की व्यवस्था की। फसलो पर से सभी चुंगी कर हटा लिया और पशुओं की नस्ल मे सुधार किया गया
- उद्योग धन्धो एवं व्यापार को प्रोत्साहन दिया। लियन एवं नीमेस नगरो में रेशम उद्योग, पेरिस एवं नेवारे में शीशा, चर्म, ऊन, लौह उद्योग को संरक्षण दिया।
- व्यापार एवं आवागमन की सुविधा के लिए सड़को, पुलो एवं नहरो का जीर्णोद्धार कराया
- तुर्की, इंग्लैण्ड, एवं हालैण्ड से व्यापारिक संधियां की गई। राजकीय सहायता से एक जहाजी बेड़ा एवं नौसेना का गठन किया गया
- हेनरी के प्रयासो से फ्रांस ने भारत एवं अमेरिका में व्यापारिक कोठियां खोली

हेनरी चतुर्थ की विदेशनीति: —

- हेनरी की विदेशनीति के 2 उद्देश्य थे। प्रथम: यूरोप की राजनीति में फ्रांस के गौरव को बढ़ाना, द्वितीय: स्पेन एवं आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा मे कमी।
- फ्रांस के गृहयुद्ध के समाप्त होते ही उसने 1595 ई० में स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस युद्ध का अंत 1598 ई० मे वरविन्स की संधि के रूप में हुआ इस संधि के द्वारा स्पेन ने हेनरी चतुर्थ के राज्यारोहण को मान्यता दे दी।
- फ्रांस की सीमा हैप्सबर्ग साम्राज्य से घिरी थी। अतः सीमा सुरक्षा के लिए उसने स्पेन व आस्ट्रिया के विरोधी देशो (जर्मनी, हालैण्ड, इटली) से मैत्री सम्बंध बनाया

- उसने टस्कनी की राजकुमारी मेरी डी मेडिसी से 1600 ई॰ में विवाह कर लिया
- 1601 ई॰ में सेवाय और 1607 ई॰ में वेनिस के साथ मैत्री संधि की। इस प्रकार मिलान को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तरी इटली में हैप्सबर्ग वंश का प्रभाव समाप्त हो गया और फ्रांस की सीमा सुरक्षित हो गई
- हेनरी ने आस्ट्रिया के विरुद्ध प्रोटेस्टेन्ट राज्यों की सहायता की नीति अपनायी। 1609 ई॰ में जब जर्मनी में जूलिक एवं क्लीव राज्यों में उत्तराधिकार युद्ध शुरू हो गया, तब उसने प्रोटेस्टेन्टों का समर्थन किया
- इसी बीच 14 मई 1610 ई॰ को एक कट्टर कैथोलिक रावेलॉक नामक व्यक्ति ने पेरिस में हेनरी चतुर्थ की हत्या कर दी।

निःसन्देह हेनरी चतुर्थ फ्रांस के प्रति अगाध देशप्रेम रखता था उसने धर्मपरिवर्तन करके धार्मिक संघर्ष एवं गृहयुद्ध का अंत किया। कैथोलिक बनने के उपरान्त भी प्रोटेस्टेन्टो के धार्मिक अधिकार एवं हितों का ध्यान रखा। उसने फ्रांस की दयनीय आर्थिक दशा में सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण सुधार कार्य किए। उसने फ्रांस में राजतंत्र के गौरव की पुनर्स्थापना की तथा साहसपूर्ण विदेशनीति का अनुसरण करके देश को स्पेनी हस्तक्षेप से मुक्त कराया।

डॉ॰ उमा शंकर गुप्ता
एसो॰ प्रोफेसर-इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जाखिनी
वाराणसी